नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

नितिन नबीन : युवा नेतृत्व की अहम भूमिका

नितिन नबीन द्वारा दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का कार्यभार संभालना केवल एक संगठनात्मक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह भाजपा की वैचारिक निरंतरता, संगठनात्मक मजबूती और भविष्य दृष्टि का स्पष्ट संकेत भी है. इस ऐतिहासिक अवसर पर स्वयं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति ने इस संदेश को और गहराई दी कि भाजपा में नेतृत्व केवल पद से नहीं, बल्कि संघर्ष, तपस्या और संगठन के प्रति निष्ठा से गढ़ा जाता है.

भाजपा मूलत: एक कैडर बेस पार्टी है, जहां कार्यकर्ता केवल चुनावी मशीनरी का हिस्सा नहीं होता, बल्कि वह पार्टी की आत्मा माना जाता है. नितिन नबीन को आगे बढ़ाकर भाजपा ने यह रेखांकित किया है कि यहां शीर्ष नेतृत्व तक पहुंचने का मार्ग दिल्ली के गलियारों से नहीं, बल्कि बूथ, मंडल और जिला स्तर की संगठनात्मक साधना से होकर गुजरता है. यह संदेश खास तौर पर उन लाखों कार्यकर्ताओं के लिए है, जो बिना किसी पद या पहचान के वर्षों से पार्टी के लिए काम करते हैं. भाजपा ने एक बार फिर सिद्ध किया है कि वह वंशवाद या तात्कालिक लोकप्रियता से नहीं, बल्कि संगठनात्मक कर्मठता से नेतृत्व गढ़ती है.

नितिन नबीन की उम्र, महज 45 वर्ष, अपने आप में एक बड़ा राजनीतिक वक्तव्य है. ऐसे समय में जब वैश्विक राजनीति नेतृत्व संकट और जड़ता से जूझ रही है, भाजपा ने यह स्पष्ट किया है कि भारत का भविष्य युवा हाथों में सुरक्षित है. यह केवल युवाओं को प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व देने का मामला नहीं है, बल्कि निर्णय प्रक्रिया, संगठन संचालन और राजनीतिक रणनीति में नई ऊर्जा और आधुनिक दृष्टिकोण को शामिल करने का प्रयास है. डिजिटल युग, सोशल मीडिया और बदलते मतदाता व्यवहार के दौर में युवा नेतृत्व संगठन को समय के साथ प्रासंगिक बनाए रखने में अहम भूमिका निभा सकता है.

नितिन को संगठन की कमान सौंपना भाजपा के 2047 विजन से भी गहराई से जुड़ा है. अमृत काल की परिकल्पना केवल सरकार तक सीमित नहीं है, बल्कि संगठनात्मक स्तर पर भी दीर्घकालिक सोच की मांग करती है. भाजपा यह समझती है कि 2047 का भारत केवल नीतियों से नहीं, बल्कि मजबूत, अनुशासित और वैचारिक रूप से स्पष्ट संगठन से बनेगा. युवा अध्यक्ष के माध्यम से पार्टी आने वाले दो दशकों के लिए नेतृत्व की निरंतरता, प्रशिक्षण और वैचारिक विस्तार की नींव रख रही है. साथ ही यह भी उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री मोदी की मौजूदगी ने इस परिवर्तन को केवल औपचारिक नहीं, बल्कि राजनीतिक और नैतिक समर्थन से युक्त बना दिया. यह संकेत है कि सरकार और संगठन के बीच समन्वय, स्पष्ट भूमिकाओं के साथ, आगे भी भाजपा की सबसे बड़ी ताकत बना रहेगा. संगठन चुनावी जीत का आधार बनेगा, और सरकार उस आधार पर नीतिगत क्रियान्वयन करेगी. कुल मिलाकर, नितिन नबीन का अध्यक्ष बनना भाजपा की उस परंपरा को आगे बढ़ाता है, जिसमें संगठन सर्वोपरि है. यह निर्णय बताता है कि भाजपा केवल वर्तमान की राजनीति नहीं, बल्कि भविष्य की संरचना भी तैयार कर रही है.

दरअसल, कार्यकर्ता आधारित संस्कृति, युवा नेतृत्व और दीर्घकालिक दृष्टि, इन तीन स्तंभों पर खड़ी भाजपा आने वाले वर्षों में भी भारतीय राजनीति में अपनी निर्णायक भूमिका बनाए रखने का स्पष्ट संकेत दे रही है.

ग्रीन लैंड का सपना ट्रम्प का बाल हठ या राज हठ...?

ऋतुपर्ण दवे

आर्कटिक क्षेत्र में रूस और चीन की गतिविधियां बढ़ने से चिंतित अमेरिका ग्रीनलैंड पर वर्चस्व पाकर भू-राजनीतिक पकड़ मजबूत करना चाहता है. दूसरी ओर ग्रीनलैंड में दुर्लभ खनिज, तेल, गैस और रेयर अर्थ एलिमेंट्स के बड़े भंडार हैं. ये भविष्य की विशाल आर्थिक और तकनीकी सम्पदा है. अभी चीन का इन उत्पादों पर 70 से 90 प्रतिशत नियंत्रण है. यह निर्भरता अमेरीका कम करना चाहता है. वही भूमंडलीय ऊष्मीकरण यानी ग्लोबल वार्मिंग के चलते आर्कटिक की बर्फ पिघल रही है, जिससे नए जलपोत मार्ग खुल रहे हैं. जब ग्रीनलैंड अमेरीका का होगा तो निश्चित तौर पर वह रूस-चीन की बढ़त रोकने में मददगार होगा. इसीलिए ट्रम्प ग्रीनलैंड को अमरीकी सुरक्षा का फ्रन्ट लाइन मानते हैं. अब ट्रम्प की नीयत चाहे जो वो उनका अंर्तमन ही जाने लेकिन क्या नोबल का शांति पुरुस्कार मिलता तो भी ट्रम्प ऐसा करते? अब यह ट्रम्प का बाल हठ है या राज हठ, वही जानें फिलाहाल ट्रम्प दुनिया में खुद को तमाशा जरूर बना रहे हैं. देखना उनका खेल कब तक चलेगा?

कभी लगता है कि ट्रम्प तानाशाह हैं, कभी लगता है कि तुनकमिजाज. शायद अमेरीका वासियों को भी अब ट्रम्प को समझ पाना मुश्किल हो रहा होगा. उन्हें चुनते वक्त भी ऐसा अंदाजा हरगिज नहीं रहा होगा. लेकिन, इतना तो समझ आ रहा है कि अपनी दूसरी पारी में ट्रम्प दुनिया में सबसे अलग करने की नीयत से हर वो काम करने पर आमादा हैं जिससे उनकी चर्चा और धमक बनी रहे.

हो सकता है कि वो ऐसा कुछ करें भी जिससे वो हीरो या विलेन कुछ तो बन जाएं. लेकिन लगता नहीं कि वो कभी अमेरीका के आदर्श राष्ट्र प्रमुखों में गिने जाएंगे! उनका दर्द जब-तब उनके बयानों से झलकता भी है. शांति के नोबल पुरुस्कार की होड़ में मात खाने के बाद ट्रम्प एकाएक अशांतिपूर्ण हरकतों पर उतारू हो गए. उनकी टीस इसी बात से समझ आती है कि इस पुरुस्कार के लिए खुद अपनी पैरवी करने वाले ट्रम्प ने नॉर्वे के प्रधानमंत्री जोनास गहर स्टोर को चिट्ठी लिख नोबेल नहीं मिलने की शिकायत तक कर दी. साथ ही यह भी लिखा कि कि 8 जंग रुकवाने के बावजूद

उन्हें नोबेल नहीं मिला इसलिए उन्होंने अब शांति के बारे में सोचना छोड़ दिया है. शांति जरूरी है, लेकिन अब वह यह भी सोचेंगे कि अमेरिका के हित में क्या सही है. ग्रीनलैंड पर जबरन कब्जा की उनकी नीयत और कोशिशों की एक वजह नोबेल शांति पुरस्कार न मिलने की खीझ भी स्पष्ट समझ आती है. रूस और चीन के खतरे की दुहाई देकर ट्रम्प नाटो सदस्य डेनमार्क के ग्रीनलैंड को हथियाने का जो दंभ भर रहे हैं, उसे अंतरर्राष्ट्रीय कानूनों और नाटो की एकता के साथ ही वैश्विक शांति के लिए गंभीर खतरा माना जा रहा है. ट्रम्प की जिद कहें या दादागिरी यह उनका दुनिया का तानाशाह बनने जैसा ही कदम कहलाएगा. देर-सबेर इसका खामियाजा अमेरीका ही भुगतेगा क्योंकि वैश्विक मंच पर दुनिया का दारागो कहलाने वाले मजबूत देश की विश्वसनीयता कमेगी. ग्रीनलैंड की जिद पर दुनिया भर में शांति के पक्षधर लोगों की समझाइश का भी ट्रम्प पर कोई असर न पड़ना मामले को गंभीर बनाता है. ग्रीनलैंड में 1979 से स्व-शासन है. उसकी विदेश और रक्षा नीति नाटो संगठन का सदस्य देश डेनमार्क देखता है.

ग्रीनलैंड डेनमार्क का अर्ध-स्वायत्त भाग है. ग्रीनलैंड और डेनमार्क सरकारों ने भी हमेशा कहा है कि ग्रीनलैंड न कभी पहले बिकाऊ था न आज है. नाटो देश भी कभी नहीं चाहेंगे कि कोई दादागिरी कर कब्जा कर ले. खुद यूरोपीय देश फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन, डेनमार्क और इटली ने भी ट्रम्प के बयान की आलोचना की है. इतना ही नहीं बल्कि सामूहिक तौर पर जवाब देने की बात भी कह ट्रम्प को चेताया तक है. इससे ट्रांस अटलांटिक संबंध भी कमजोर होंगे. ट्रम्प की नीयत तो अपने पहले ही कार्यकाल में ग्रीनलैंड को खरीदने की थी जो तब भी पूरी नहीं हो पाई. आठ यूरोपीय देशों डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फ्रांस, जर्मनी, यूनाइटेड किंगडम, नीदरलैंड और फिनलैंड पर टैरिफ की धमकी को ये देश ट्रम्प का ब्लैकमेल, समझ से परे और अनुचित बता रहे हैं. ट्रम्प की हरकतों से यूरोप और अमेरिका के सुरक्षा सहयोग संगठन नाटो के भविष्य पर भी प्रश्न चिन्ह दिख रहा है. खुद 80 प्रतिशत अमरीकी भी नहीं चाहते कि ग्रीनलैंड अमेरिका का हिस्सा बने क्योंकि इससे नाटो में दो फाड़ होगी जिसका फायदा चीन और रूस जैसे अमेरिका विरोधियों को मिलेगा.

ऐसा भी नहीं है कि यूरोपीय संघ यानी ईयू ट्रम्प के लगाए गए टैरिफ का जवाब देने में पीछे है. ईयू 27 यूरोपीय देशों का राजनीतिक और आर्थिक संगठन है. इसमें ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, बुल्गारिया, क्रोएशिया, साइप्रस, चेक गणराज्य, डेनमार्क, एस्टोनिया, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, हंगरी, आयरलैंड, इटली, लातविया, लिथुआनिया, लक्जमबर्ग, माल्टा, नीदरलैंड, पोलैंड, पुर्तगाल, रोमानिया, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, स्पेन और स्वीडन शामिल हैं. इन सभी देशों का रुख अमेरिका पर ट्रेड पाबंदियां लगाने का है जिस पर वो गंभीरता से विचार कर रहे हैं. जबकि इनका लक्ष्य सदस्य देशों के बीच शांति, समृद्धि और स्थिरता को बढ़ावा देना है. ऐसी स्थिति में नाटो देश भी अमेरिका की मुखालफत करेंगे. हालांकि ईयू एक खास कानूनी हथियार के इस्तेमाल की सोच रहा है, जिसे 'ट्रेड बाजूका' कहते हैं.

हर जाति की लड़कियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ रहा है.

डिजिटल इंडिया, कच्ची उम्र का इश्क... और घर से पलायन करती हुई बालाएं

ओजस्कर पाण्डेय

बेहद संवेदनशील मुद्दा है किसी मां-बाप की बेटी का घर से भाग जाना. भारतीय समाज में लड़कियों का घर से भाग जाना बहुत ही कलंकित कार्य माना जाता है. लड़की अगर एक रात भी अपने घर से बाहर बिता दे तो उसे उसके माता पिता तक स्वीकार नहीं कर पाते. ऐसे में लड़कियां या तो आत्महत्या कर लेती हैं या फिर मजबूरन उन्हें गलत रास्ते अपनाने पड़ते हैं. आधुनिक समय में ये कुरीतियां नए रूप में सामने आ रही है, भारतीय समाज को पिछले हजारों वर्षों से जातियों के जंजाल ने जकड़ रखा है, कोई परिवार अपनी जाति के बाहर अपनी बेटी का ब्याह नहीं करना चाहता, परिणामस्वरूप लड़कियां घर से भाग कर ब्याह कर रही है, उसके बाद झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा की वजह से ऑनर किलिंग जैसी घटनाएं दिन प्रतिदिन सामने आती रहती है. प्राचीन काल में जातियों से केवल निम्न जातियों के लोगों को नुक्सान हो रहा था, परंतु आधुनिक समय में इस कुप्रथा से हर जाति की लड़कियों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ रहा है. हमें ज़रूरत है जातियों के इन कठोर बंधनों को तोड़ने की ताकि लड़कियों को मजबूर ना होना पड़े घर की दीवारें और नियम तोड़ने को. लड़कियों का क्या भविष्य रहेगा घर से भागी लड़की को कई बार लड़के ही कहीं बेच देते हैं. कई लड़कियों को उसके पति छोड़ देते हैं. परन्तु सोचने का विषय ये है कि ये लड़कियां घर से भाग क्यों रही हैं? क्यों एक बेटी अपने पिता के प्यार को, दादी के दुलार को, भाई के रिश्ते को, मां की ममता को सब कुछ दांव पर लगा देती है और चुन लेती है प्रेमी के प्रेम को?

आज के परिप्रेक्ष्य में जितनी भी लड़कियां भाग रही है उन सभी के घर बहुत छोटे छोटे है, बहुत ही ज्यादा गरीबी से जूझ रहे हैं, इन लड़कियों के परिवार सुबह से शाम तक मजदूरी करते है, लगभग सभी लड़कियों के पिता शराब का सेवन करते है जिस वजह से हर एक दो दिन बाद घर में परिवारिक क्लेश होता रहता है और सारा दिन काम के लिए घर से बाहर होने की वजह से और शाम को शराब पीने की वजह से अपने बच्चों की तरफ खास ध्यान नहीं दे पाते, थकान और नशे की वजह से उन्हें रात को चारपाई पर लेटते ही नींद आ जाती है और अगली सुबह फिर वही प्रक्रिया, काम को जाना, शाम को आना, ऐसे माहौल में लड़कियां इस गरीबी, इस माहौल से आजाद होने के लिए ऐसे कदम उठा रही है. दूसरा दलित समुदाय में भी जातियों का पदसोपनिक ढांचा है, हर जाति एक दूसरे के उपर है, एक दलित भी अपनी जाति के अलावा अन्य दूसरी दलित जाति के साथ रिश्ता नहीं जोड़ना चाहता, इस वजह से भी ये कुप्रथा फैल रही है. लड़कियों के इस कदम से उनको खुद को, उनके परिवार के साथ साथ उनकी छोटी बहनों को नुक्सान हो रहा है, सबसे प्रथम तो उनकी बहनों को भी लोग आसान टारगेट मानते है और सोचते है कि ये लड़की भी अपनी बहन की तरह होगी.

दूसरा इन छोटी बहनों को स्कूल से हटा लिया जाता है, परिवार में एक भय पैदा हो जाता है कि कहीं ये भी वैसा कदम ना उठा ले, उनकी छोटी उम्र में शादी कर दी जाती है, लगभग लड़कियां नाबालिग होती है, इन नाबालिग लड़कियों की शादी पर ना तो समाज कुछ बोलता है ना ही गांव के लोग, सभी को लगता है कि इनकी शादी करना ही सबसे उचित कार्य है यदि शादी नहीं की तो ये लड़कियां खुद शादी कर लेगी, इन 15-16 वर्ष की नाबालिग लड़कियों को शादी के बाद अनेकों स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है शादी की उम्र होने तक ये 2-3 बच्चों कि मां बन जाती है और बच्चों को पालने के लिए फिर से इनके जीवन की वहीं प्रक्रिया शुरू हो जाती है जो इनके मां बाप की होती है ये एक निरंतर चलने वाली क्रिया है और इसने ऐसी अनेकों लड़कियों के जीवन को निगल लिया है.

ट्रायल कोर्ट के रेकॉर्ड को देखा जाए तो पता चला कि लगभग 70 पर्सेंट मामलों में पीसीएमए का इस्तेमाल उन लड़कियों के पैरंट्स द्वारा किया गया, जो घर से भाग गईं. ऐसा ही कुछ पॉक्सो ऐक्ट से साथ भी है.% इसका नतीजा यह है कि युवा अपने पैरंट्स की ओर से तो नाराजगी झेलते ही हैं, कई बार लड़कों को भी सेक्स ऑफेंडर्स के तौर पर पेश किया जाता है. ऐसे में लड़कों के लिए मुश्किल हो सकती है क्योंकि पॉक्सो ऐक्ट में हालिया बदलाव के चलते 18 साल से कम उम्र के व्यक्ति का यौन उत्पीड़न करने वाले को कम से कम 10 साल की सजा हो सकती है. देश में करीब 47 प्रतिशत बच्चे प्यार में पड़कर या फिर पढ़ाई से पीछा छुड़ाने के लिए घर से भाग रहे हैं. क्राइम ब्रांच की मानव तस्करी पर नजर रखने वाली और इसे रोकने वाली इकाई एंटि-ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट गुमशुदा बच्चों की तलाश के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंची है. जानकारी के अनुसार 8 से 14 वर्ष के आयु समूह के 40 प्रतिशत बच्चे दूसरे शहरों की शानो-शौकत भरी जिंदगी के लालच में आ गए और घर छोड़ दिया.

मुंबई महापौर पद के लिए खींचतान

मुंबई महापालिका की 227 सीटों पर हुए चुनाव में बीजेपी 89 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है. शिवसेना (शिंदे) ने 29 सीटें हासिल की हैं. बहुमत के लिए 114 सदस्यों का संख्याबल आवश्यक है. ऐसी हालत में बीजेपी को एकनाथ शिंदे की शर्त मानकर उनका सहयोग लेना जरूरी हो जाएगा. बीजेपी 1997 से शिवसेना के साथ थी तब बीजेपी को 27 से 35 के बीच सीटें मिला करती थीं. तब बीजेपी के हिस्से में उपमहापौर या सुधार समिति जैसे पद आया करते थे. अब शिंदे शिवसेना अपने सदस्य कम होने पर भी ढाई वर्ष के लिए महापौर या स्थायी समिति सभापति का पद मांग रही है. शिंदे की दलील है कि यह शिवसेना संस्थापक बाल ठाकरे का जन्म शताब्दी वर्ष है. इसलिए शिवसेना का मेयर होना चाहिए. महापालिका में वर्चस्व हासिल होने पर बड़े पैमाने पर विकास कार्यों के ठेके, लाइसेंस जारी करने, जमीन का उपयोग, रिडेवलपमेंट करने का अवसर मिलता है. इसलिए युति की दोनों पार्टियों में खींचतान होना स्वाभाविक है. शिंदे की पार्टी के सदस्य चुनाव जीतने के बाद अपने घर जाने की बजाय मुंबई के फाइव स्टार होटल में रखे गए हैं. इसकी वजह यह मानी जा रही है कि कहीं उन्हें कोई अपनी ओर फोड़ न ले. इसे महायुति के घटक दलों के बीच अविश्वास माना जा रहा है. जिस महापालिका का वार्षिक बजट 75,000 करोड़ रुपए का है वहां की चाबी अपने हाथ रखने को लेकर होड़ मची हुई है.

एकनाथ शिंदे अनेक बार कह चुके हैं कि 2024 का विधानसभा चुनाव उनके नेतृत्व में लड़े जाने के कारण महायुति सरकार फिर सत्ता में आई. शिंदे इस समय मुंबई के पालकमंत्री हैं. उन्होंने मुख्यमंत्री रहते हुए मुंबई के विकास कार्यों पर ध्यान दिया था जिसमें सड़क निर्माण, नाला सफाई, कोस्टल रोड पूरा करना व अटलसेतु के निर्माण में विशेष रुचि दिखाना शामिल था. विधानसभा चुनाव के बाद शिंदे की नाराजगी देखते हुए उन्हें नगर विकास विभाग दिया गया था. अब शिंदे सेना की बीजेपी के साथ महापालिका के महत्वपूर्ण पदों के लिए सौदेबाजी होना तय है. क्या बीजेपी इसके लिए त्याग करने को तैयार होगी और वह भी किस सीमा तक? बगैर सहयोग के बात नहीं बनेगी.

-एमपी मिश्रा

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

मकान, कार, ऑटो की संपत्ति इंदौर का भिखारी करोड़पति

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इंदौर में एक भिखारी करोड़पति निकला. भिखारीमुक्त शहर अभियान चलाए जाने के दौरान उसके बारे में पता चला. उस भिखारी का नाम मांगीलाल है.' हमने कहा, 'जब नाम मांगीलाल है तो भीख मांगेगा ही! यह उसका पेशा या शौक हो सकता है. कुछ लोग आदत से मजबूर होते हैं और हर समय बेशर्मी से हाथ फैलाते हैं. उनकी जिंदगी हाथ में कटोरा लेकर भीख मांगने में ही बीत जाती है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इंदौर के सराफा बाजार में पहिएवाली ट्राली पर बैठे मांगीलाल की दीनता देखकर लोग उसे भिक्षा देते हैं. जब मध्यप्रदेश सरकार के महिला व बाल विकास विभाग की टीम ने मांगीलाल से कहा कि उसका पुनर्वास कर दिया जाएगा तो उसने सच बता दिया कि भगतसिंह नगर में उसका 3 मंजिला मकान है. शिवनगर में भी 600 वर्ग फीट का मकान और अलवासा में फ्लैट है. उसके पास 3 आटोरिक्शा, एक स्विफ्ट डिजायर कार है जिसके लिए उसने ड्राइवर नौकरी पर रखा है. वह भीख की

रकम से ऊंची ब्याज दर पर साहूकारी-महाजनी का धंधा करता है. सराफा बाजार के छोटे व्यापारियों को ब्याज पर रकम देता है. उसका बैंक अकाउंट भी है और प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत उसे मकान भी मिला है.'

हमने कहा, 'इतना सब होने पर भी वह आदत से लाचार है. उसकी मानसिकता स्वाभिमान शून्य भिखमंगे की है. आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर भी वह भीख मांगकर लोगों को ठगता है. उसे कोई कितना भी समझाए या काउंसलिंग करे वह सुधरनेवाला नहीं है. ऐसे लोगों को चीटिंग के आरोप में कड़ी सजा देकर जेल भेजना चाहिए.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ऐसे कितने ही नकली भिखारी होंगे जो लोगों की सहानुभूति का अनुचित लाभउठाकर उनका पैसा ठगते होंगे. इन पर निगरानी रखकर भंडाफोड़ करना होगा. इंदौर के इस भिखारी ने तो धोखाधड़ी कर प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ भी उठाया. यह अपराध है. जो वास्तव में दरिद्र और लाचार हैं उनकी बात अलग है, लेकिन जो करोड़ों की दौलत रखने के बाद भी भीख मांगे, उस पर दया करने की कोई आवश्यकता नहीं है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12148 - डॉ. सागर खादीवाला

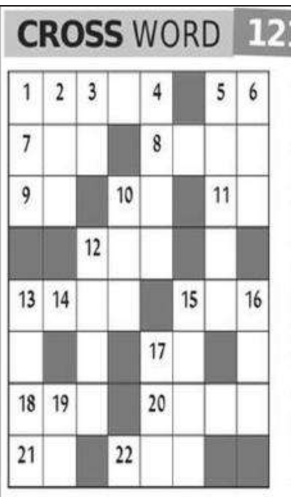

बाएं से दाएं

1. नाक से बोलना, मिमियाना 5. वाष्प, पानी का वायु रूप 7. गांजे के वृक्ष का गोंद जिसे नशेबाज पीते हैं 8. पाजीपन या शरारत करने वाला 9. लकीर, रेला, प्रथा, चाल 10. छाज, सूप 11. किसी काटने वाले हथियार का तेज सिरा या किनारा 12. किसी मूर्ति के ऊपर दीपक घुमाने का कार्य 13. किसी वस्तु के मूल या तत्व से संबंध रखने वाला, असल 15. काम-धंधे या टहल के लिए वेतन पर रखा हुआ आदमी, वैतनिक कर्मचारी 17. पृथ्वी, जीभ, शोरबा, तरकारी आदि का तरल अंश 18, निषेध, मनाही, बाधा (सं.) 20. पाठशाला, विद्यालय (उर्दू) 21. नाक में पहनने का एक गहना 22. स्वर्णकार, स्वर्ण आदि के गहने बनाने वाला

ऊपर से नीचे

1. वमन करने की इच्छा 2. दोजख 3. हीला, बहाना 4. एक प्रकार का गोल और सेब के आकार का मीठा फल 5. वह जिस पर किसी का काम करने का या किसी वस्तु की रक्षा करने का उत्तरदायित्व हो (चार्ज होल्डर) 6. पंक्ति, कतार 10. रूप, आकृति, छवि (उर्दू) 12. गहना 13. कीमती 15. एक तीक्ष्ण खार जो सींग-खुर-बाल आदि के भभके से अर्क खींचकर निकाला जाता है 16. नर्तकी, नाचने वाली (उर्दू) 17. आनंद करना, भोग विलास के निमित्त कहीं ठहरना 19. शतरंज का एक मोहरा जिसे ऊंट कहते है (उर्दू)

Solution 12147

क	वि	स	म्मे	ल	न		उ
ल		मा		बा	र	दा	त
श	ब	न	म		क	ता	र
	क	ता	ई		ट		न
का	ना			दु		भ	
र		व्या	या	म		ग	त
खा	न	पा	न		ज	वा	ब
ना	ग	र		ग	ब	न	

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में सामाजिक कार्योमें ख्याति प्राप्त होगी, नई योजनाओं में विचार विमर्श होगा, वर्ष के मध्य में भूमि भवन आदि के मामलों में सफलता मिलेगी, वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक क्षेत्र में विवाद होगा, व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ अधिक करना पड़ेगी, निकट संबंधी के कारण मानसिक तनाव रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार के क्षेत्र में भागदौड़ रहेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की राजनीति के क्षेत्र में विवाद की स्थिति आयेगी, कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में भागदौड़ अधिक करना होगी, निकट संबंधी के कारण तनाव रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन आदि कार्यो में सफलता मिलेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यापार में भागदौड़ अधिक करना होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आपसी व्यक्तियों से तनाव रह सकता है.

मेष- थोडी परेशानी के बादजूद आपकी सफलता सुनिश्चित है, सामाजिक सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा.

वृषभ- मन में चल रही उलझन आपको फैसला लेने में रोकेगी. राजकीय कार्योमें सफलता मिलेगी. लाभदायक योजना की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा.

मिथुन- बुजुर्गो के स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता रहेगी, जोखिम केकार्यो से दूर रहें. आवेश में लिया गया निर्णय नुकसानदायक रहेगा. व्यापारिक समस्याओं का समाधान होगा.

कर्क- कड़ी मेहनत से शानदार परिणाम मिलेंगे, क्रोध पर नियंत्रण रखकर कार्य करें. किसी दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार मिलेगा.

सिंह- रूकी हुई योजना फिर से शुरू करने का मन बनेगा. पारिवारिक सुख तथा सौहार्द बना रहेगा. नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा. व्यापार व्यवसाय अच्छा चलेगा.

कन्या- नए कारोबार में निवेश की संभावना बनेगी. पारिवारिक मामले उलझने से चिन्ता होगी. अपव्यय पर नियंत्रण रखें. संपत्ति वाहनादि का सुख प्राप्त होगा.

तुला- युवाओं को कैरियर में आ रही परेशानियों से छुटकारा मिलेगा. वाकपटुता पर नियंत्रण रखें. मित्रता उपयोगी रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा.

वृश्चिक- अपनी ताकत का इस्तेमाल विरोधियोंको रोकने में करना पड़ेगा. वाहनादि का सुख प्राप्त होगा. भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी. मित्रवर्ग आपकी मदद करेंगे.

धनु- व्यर्थ के झगड़े में आपका समय बर्बाद हो सकता है. मांगलिक खर्च संभव है. अतिथि वृश्चिकमन होगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक सिद्ध होगी.

मकर- रूकी हुई योजनाओं में गति आयेगी. आत्म विश्वास एवं मनोबल बना रहेगा. इच्छित कार्यो की पूर्ति होगी. बिगड़ा काम बनने का योग है.

कुम्भ- दूसरों की आलोचना से घबराकर कार्य योजना बीच में ही छोड़ सकते हैं. सोचे हुये कार्यो में सफलता के योग है. मित्रों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा.

मीन- आप बेहतर तरीके से काम निपटाने का प्रयास करेंगे. सहयोगी आपका विरोध कर सकते है. व्यापार व्यवसाय में लाभ सामान्य ही रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, होशियार होगा. सर्विस की ओर अधिक झुकाव रहेगा. कार्यकुशल तथा परिश्रमी होगा. मित्रों की संख्या सीमित रहेगी. जन्म स्थान से दूर रहकर अपनी उन्नति करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

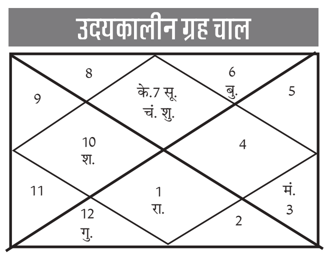

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2082 माघ शुक्ल तृतीया बुधवासरे रात 2/2, धनिष्ठा नक्षत्रे दिन 1/49, व्यतिपात योगे रात 7/7, तैतिल करणे सू.उ. 6/40, सू.अ. 5/20, चन्द्रचार कुम्भ, शु.रा. 11, 1, 2, 5, 6, 8 अ.रा. 12, 3, 4, 7, 9, 10 शुभांक- 4, 6, 0.

व्यापार भविष्य

माघ शुक्ल तृतीया को धनिष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से मैथी धनियां, हल्दी, जीरा, आदि में तेजी होगी. सोना, चांदी, शेयर आदि में मोती, बिनौला, लोहा, में तेजी का रूख रहेगा. आज वायदा विचार में मंगल के बने भाव घटें, उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 1599 है.

SUDOKU 7280

2	9			5				4
4			2		7		8	
	1	6		8				3
8		5		9				7
3	6			2			1	9
1				3		5		2
5				7		6	3	
	3		1		8			5
9				6			2	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7279

7	8	1	6	9	4	2	5	3
2	6	4	5	3	6	1	7	9
5	3	9	1	2	7	4	6	8
9	5	8	7	4	1	3	2	6
1	2	3	9	5	6	7	8	4
4	7	6	3	8	2	9	1	5
3	9	7	2	6	5	8	4	1
6	4	2	8	1	9	5	3	7
8	1	5	4	7	3	6	9	2